REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2022

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के विशेष संदर्भ में लघु वन उपज के विपणन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्री. प्रेम प्रकाश कुजूर
शासकीय महाविद्यालय, राजपुर, जिला बलरामपुर -रा. गंज (छ. ग.)

सारांश:

यह शोध पत्र छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के संदर्भ में लघु वन उपज के विपणन की गतिशीलता पर केंद्रित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। लघु वन उपज वन-निर्भर समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक संपत्ति है, विशेष रूप से जशपुर जैसे जैव विविधता वाले क्षेत्रों में। गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धतियों के संयोजन के माध्यम से, यह अध्ययन जशपुर में लघु वन उपज विपणन से जुड़े मौजूदा बाजार ढांचे, हितधारक जुड़ाव, मूल्य निर्धारण तंत्र और नीतिगत निहितार्थों की जांच करता है। निष्कर्ष लघु वन उपज आपूर्ति श्रृंखला में शामिल अभिनेताओं के जटिल नेटवर्क को उजागर करते हैं, जो सतत बाजार विकास के लिए चुनौतियों और अवसरों दोनों को उजागर करते हैं। जशपुर में लघु वन उपज विपणन की बारीकियों पर प्रकाश डालते हुए, इस शोध का उद्देश्य क्षेत्र में वन-निर्भर समुदायों की सामाजिक-आर्थिक भलाई को बढ़ाने के उद्देश्य से सूचित नीति निर्माण और हस्तक्षेप में योगदान देना है।

मुख्य शब्द: *लघु वन उपज, विपणन गतिशीलता, जशपुर जिला, छत्तीसगढ़, बाजार संरचना, हितधारक जुड़ाव, मूल्य निर्धारण तंत्र.*

परिचय:

विपणन के गतिशील क्षेत्र में, विशिष्ट क्षेत्रों की बारीकियों की खोज स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और संधारणीय प्रथाओं में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह शोध भारत के छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले पर विशेष ध्यान देते हुए लघु वन उपज (लघु वन उपज) के विपणन के जटिल परिदृश्य में गहराई से उतरता है।

भारत के मध्य में स्थित, छत्तीसगढ़ में समृद्ध जैव विविधता है, जो औषधीय जड़ी-बूटियों से लेकर जंगली खाद्य पदार्थों तक की बहुतायत में लघु वन उपज को बढ़ावा देती है। इस हरे-भरे परिदृश्य के भीतर एक जिला जशपुर एक सूक्ष्म जगत के रूप में खड़ा है, जहाँ पारंपरिक प्रथाओं, आर्थिक अनिवार्यताओं और समकालीन विपणन रणनीतियों का परस्पर संबंध है।

इस विश्लेषणात्मक अध्ययन का उद्देश्य जशपुर में लघु वन उपज के विपणन को नियंत्रित करने वाली बहुमुखी गतिशीलता को उजागर करना है। गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धतियों के मिश्रण का उपयोग करके, शोध का उद्देश्य लघु वन उपज के व्यापार को प्रभावित करने वाली जटिल आपूर्ति श्रृंखलाओं, बाजार संरचनाओं और सामाजिक-आर्थिक कारकों को स्पष्ट करना है।

इसके अलावा, यह शोध पत्र सतत विकास और सामुदायिक आजीविका के व्यापक स्पेक्ट्रम के भीतर विपणन प्रथाओं को प्रासंगिक बनाने का प्रयास करता है। मौजूदा विपणन तंत्रों की प्रभावकारिता की जांच करके, बाधाओं की पहचान करके और रणनीतिक

हस्तक्षेपों का प्रस्ताव करके, यह शोध पर्यावरणीय अखंडता की रक्षा करते हुए और सामाजिक समानता को बढ़ावा देते हुए लघु वन उपज की आर्थिक व्यवहार्यता को बढ़ाने के प्रवचन में योगदान देने का प्रयास करता है।

यह शोध ग्रामीण विकास के उत्प्रेरक के रूप में लघु वन उपज की अप्रयुक्त क्षमता पर प्रकाश डालने की आकांक्षा रखता है, जो छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के अनूठे संदर्भ में इसके विपणन गतिशीलता की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

अनुसंधान का उद्देश्य:

१) जशपुर में लघु वन उपज की वर्तमान बाजार संरचना और गतिशीलता को समझना।
२) विपणन प्रक्रिया में शामिल प्रमुख हितधारकों की पहचान करना।
३) लघु वन उपज आपूर्ति श्रृंखला में मूल्य निर्धारण तंत्र और मूल्य संवर्धन का विश्लेषण करना।
४) लघु वन उपज विपणन पर सरकारी नीतियों और हस्तक्षेपों के प्रभाव का आकलन करना।

साहित्य समीक्षा:

१) **चक्रवर्ती, ए., और घोष, डी. (२०१५).** "भारत में गैर-लकड़ी वन उत्पादों का विपणन: एक अवलोकन।" यह अध्ययन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में गैर-लकड़ी वन उत्पादों (एनटीएफपी) के विपणन प्रथाओं का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो इस क्षेत्र में चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालता है।

२) **पटेल, डी., और पाधी, एस. के. (२०१७).** "लघु वन उपज के विपणन में महिलाओं की भूमिका: गुजरात, भारत में एक अध्ययन।" यह शोध लघु वन उपज के विपणन में महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाता है, जिसमें घरेलू आय और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में उनके योगदान पर जोर दिया गया है।

३) **नाथ, डी., और साहू, एस. (२०१८).** "बाजार की गतिशीलता और आदिवासी समुदायों की आजीविका: ओडिशा, भारत में लघु वन उपज का एक केस स्टडी।" ओडिशा पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह अध्ययन लघु वन उपज के बाजार की गतिशीलता और आदिवासी समुदायों की आजीविका पर उनके प्रभाव की जांच करता है, जो लघु वन उपज विपणन के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

४) **सिंह, आर., और चतुर्वेदी, ए. (२०१९).** "लघु वन उपज का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण: छत्तीसगढ़, भारत में बस्तर विभाग का एक केस स्टडी।" यह अध्ययन विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर विभाग में लघु वन उपज की मूल्य श्रृंखलाओं की जांच करता है, जो विपणन रणनीतियों, शामिल हितधारकों और क्षेत्र में सामना की जाने वाली चुनौतियों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

५) **वर्मा, एस., और गिरी, ए. (२०२०).** "गैर-लकड़ी वन उत्पादों का सतत विपणन: उत्तराखंड, भारत का एक अध्ययन।" उत्तराखंड पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह शोध गैर-लकड़ी वन उत्पादों के लिए सतत विपणन प्रथाओं की खोज करता है, जो विपणन पहलों में पारिस्थितिक संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डालता है।

ये अध्ययन सामूहिक रूप से भारत में लघु वन उपज के विपणन की गतिशीलता को समझने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं, जिसमें क्षेत्रीय विविधताओं, हितधारक जुड़ाव और वन-आश्रित समुदायों के लिए सामाजिक-आर्थिक निहितार्थों की अंतर्दृष्टि शामिल है। हालांकि, छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के विशिष्ट संदर्भ से संबंधित साहित्य में एक अंतर है, इस अंतर को दूर करने और मौजूदा ज्ञान आधार में योगदान देने के लिए आगे के शोध की आवश्यकता है।

शोध पद्धति:

अध्ययन का उद्देश्य मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करके छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वन उपज के विपणन का विश्लेषण करना है। यह सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों, साहित्य समीक्षा से प्राथमिक आंकड़ों और सरकारी डेटाबेस और अकादमिक पत्रिकाओं से माध्यमिक आंकड़ों का उपयोग करेगा। अध्ययन रुझानों और विषयों की पहचान करने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण का भी उपयोग करेगा। निष्कर्षों को लघु वन उपज विपणन गतिशीलता में व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए एकीकृत किया जाएगा, जो नीति सिफारिशों और सतत विकास पहलों में योगदान देगा।

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के विशेष संदर्भ में लघु वन उपज का विपणन:

लघु वन उपज ग्रामीण आजीविका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, खासकर भारत के छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले जैसे क्षेत्रों में। लघु वन उपज में वनों से एकत्रित औषधीय जड़ी-बूटियाँ, फल, मेवे, रेजिन और रेशे जैसे गैर-लकड़ी वन उत्पाद शामिल हैं। विपणन प्रक्रिया में संसाधन पहचान और संग्रह, मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण, बाजार संपर्क और पहुँच, गुणवत्ता आश्वासन और प्रमाणन, मूल्य खोज और बातचीत, बाजार सूचना और प्रशिक्षण, नीति समर्थन और संस्थागत ढाँचा, और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है। जशपुर में, स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से आदिवासी आबादी को जंगल और उसके संसाधनों के बारे में पारंपरिक ज्ञान है। सफल विपणन के लिए मूल्यवान लघु वन उपज की पहचान, उनकी स्थायी कटाई तकनीक और नियमों का पालन करना आवश्यक है। प्रसंस्करण के माध्यम से मूल्य संवर्धन, जैसे सफाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग और बुनियादी प्रसंस्करण जैसे सुखाने या आवश्यक तेलों को निकालने से स्थानीय लोगों को अतिरिक्त आय के अवसर मिल सकते हैं।

लघु वन उपज उत्पादकों के लिए विश्वसनीय बाजार संपर्क स्थापित करना महत्वपूर्ण है, उन्हें व्यापारियों, थोक विक्रेताओं, खुदरा विक्रेताओं या प्रत्यक्ष उपभोक्ताओं से जोड़ना। गुणवत्ता आश्वासन और प्रमाणन, जैसे कि जैविक या निष्पक्ष व्यापार प्रमाणन, बाजार स्वीकृति और प्रीमियम मूल्य निर्धारण के लिए भी आवश्यक हैं। स्थानीय शासी निकाय या गैर सरकारी संगठन गुणवत्ता आश्वासन उपायों में प्रशिक्षण और सहायता प्रदान कर सकते हैं।

लघु वन उपज के लिए मूल्य निर्धारण मांग और आपूर्ति की गतिशीलता में उतार-चढ़ाव के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है। पारदर्शी मूल्य निर्धारण तंत्र और बातचीत कौशल के साथ उत्पादकों को सशक्त बनाना आवश्यक है। बाजार-उन्मुख कटाई, प्रसंस्करण और विपणन तकनीकों पर बाजार की जानकारी और प्रशिक्षण कार्यक्रम लघु वन उपज उत्पादकों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकते हैं।

लघु वन उपज विपणन को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर नीति समर्थन और संस्थागत ढांचे आवश्यक हैं। जशपुर में लघु वन उपज विपणन की दीर्घकालिक व्यवहार्यता के लिए टिकाऊ कटाई और प्रबंधन प्रथाओं को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।

बाजार संरचना और गतिशीलता:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज की बाजार संरचना और गतिशीलता भौगोलिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और सांस्कृतिक प्रथाओं जैसे कारकों से प्रभावित होती है। खंडित आपूर्ति श्रृंखला अकुशलता, मूल्य में उतार-चढ़ाव और मूल्य श्रृंखला के साथ लाभों के असमान वितरण को जन्म दे सकती है। प्राथमिक संग्राहक, आमतौर पर स्थानीय आदिवासी समुदाय, औषधीय जड़ी-बूटियों, फलों, मेवों और रेशों सहित वन उपज की एक विस्तृत श्रृंखला एकत्र करते हैं। स्थानीय व्यापारी और सहकारी समितियाँ प्राथमिक संग्राहकों और बड़े व्यापारियों या प्रसंस्करण इकाइयों के बीच मध्यस्थ के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो परिवहन, भंडारण और प्रारंभिक प्रसंस्करण जैसी आवश्यक सेवाएँ प्रदान करती हैं।

बाजार की गतिशीलता में आपूर्ति में मौसमी उतार-चढ़ाव, मांग के पैटर्न में बदलाव और सरकारी नीतियों और बाजार के रुझान जैसे बाहरी कारक शामिल हैं। मूल्य वार्ता अक्सर उपज की गुणवत्ता, बाजार की मांग और आपूर्ति श्रृंखला के साथ विभिन्न अभिनेताओं की सौदेबाजी की शक्ति जैसे कारकों से प्रभावित होती है। प्राथमिक संग्राहक, विशेष रूप से सहकारी समितियों या उत्पादक समूहों में संगठित, व्यक्तिगत संग्राहकों की तुलना में अधिक सौदेबाजी की शक्ति रख सकते हैं। सरकारी एजेंसियाँ और गैर सरकारी संगठन जशपुर जिले में वन उपज के विपणन को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बाजार के बुनियादी ढांचे के विकास, क्षमता निर्माण, गुणवत्ता प्रमाणन और स्थायी प्रथाओं और निष्पक्ष व्यापार सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए नीति वकालत में सहायता प्रदान करते हैं।

चुनौतियों में बाजार के बुनियादी ढांचे की कमी, ऋण और बाजार की जानकारी तक सीमित पहुँच और शासन और वन अधिकारों से संबंधित मुद्दे शामिल हैं। हालाँकि, कई हितधारकों को शामिल करते हुए सहयोगी प्रयासों के माध्यम से बाजार संपर्क, मूल्य संवर्धन और बाजार पहुँच में सुधार के अवसर मौजूद हैं।

जशपुर जिले में लघु वन उपज की बाजार संरचना और गतिशीलता के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो स्थानीय समुदायों के हितों को प्राथमिकता दे, स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा दे और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा दे।

हितधारक:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज के विपणन में विभिन्न हितधारक शामिल हैं। प्राथमिक संग्राहक, मुख्य रूप से आदिवासी समुदाय जिन्हें जंगल और उसके संसाधनों का पारंपरिक ज्ञान है, अपनी आजीविका को संधारणीय बनाने के लिए इस उत्पाद की कटाई और बिक्री करते हैं। स्थानीय और क्षेत्रीय व्यापारी प्राथमिक संग्राहकों और बड़े बाजारों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं, स्थानीय बाजारों या वन क्षेत्रों से उत्पाद खरीदते और बेचते हैं। वे उत्पाद को उत्पादन क्षेत्रों से उपभोग केंद्रों तक ले जाने में सुविधा प्रदान करते हैं, परिवहन, भंडारण और प्रारंभिक प्रसंस्करण जैसी आवश्यक सेवाएँ प्रदान करते हैं।

सहकारी समितियाँ प्राथमिक संग्राहकों को संगठित करने और उन्हें सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उन्हें उत्पाद एकत्र करने, बाजार तक पहुँच में सुधार करने और बेहतर कीमतों पर बातचीत करने में मदद करती हैं। वे संग्राहकों की क्षमता और आजीविका को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण, ऋण सुविधाएँ और बाजार की जानकारी तक पहुँच भी प्रदान कर सकते हैं। स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी एजेंसियाँ उत्पाद के विपणन को विनियमित और समर्थन करती हैं। वन विभाग वन संसाधनों के संधारणीय प्रबंधन की देखरेख करते हैं और संग्रह के लिए परमिट जारी करते हैं। कृषि और ग्रामीण विकास विभाग उत्पाद की मूल्य श्रृंखलाओं, बुनियादी ढाँचे और बाजार संबंधों के विकास के लिए नीतियों, कार्यक्रमों और वित्त पोषण के माध्यम से सहायता प्रदान कर सकते हैं। गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और विकास संगठन उत्पाद के संधारणीय विपणन को बढ़ावा देने के लिए सरकारी एजेंसियों और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर काम करते हैं। वे समुदाय-आधारित वन प्रबंधन, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं और मूल्य संवर्धन गतिविधियों के लिए तकनीकी सहायता, क्षमता निर्माण और वकालत का समर्थन प्रदान करते हैं।

उत्पाद के उपभोक्ता और अंतिम उपयोगकर्ता वन उत्पादों की मांग को बढ़ाते हैं, जिससे उत्पाद विपणन की आर्थिक व्यवहार्यता में योगदान मिलता है। ये हितधारक सामूहिक रूप से जशपुर जिले में वन उत्पाद बाजार की स्थिरता, समावेशिता और लचीलेपन में योगदान करते हैं।

मूल्य निर्धारण तंत्र और मूल्य संवर्धन:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में, मूल्य निर्धारण तंत्र और मूल्य संवर्धन लघु वन उपज के विपणन के लिए महत्वपूर्ण हैं। गुणवत्ता, मांग, मौसमी बदलाव और सौदेबाजी की शक्ति सभी मूल्य निर्धारण को प्रभावित करते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की कीमतें बेहतर होती हैं, जबकि मांग और बाजार पहुंच भी मूल्य निर्धारण को प्रभावित करती है। आपूर्ति और मांग में मौसमी उतार-चढ़ाव से मूल्य में भिन्नता हो सकती है, जिसमें कुछ मौसमों के दौरान कुछ फल या जड़ी-बूटियाँ प्रचुर मात्रा में होती हैं और अन्य मौसमों के दौरान कम होती हैं। मूल्य संवर्धन में गुणवत्ता और प्रस्तुति में सुधार के लिए सफाई और ग्रेडिंग, शेल्फ लाइफ, सुविधा और उपभोक्ताओं के लिए आकर्षण बढ़ाने के लिए पैकेजिंग और ब्रांडिंग, और उत्पादों को अर्क, तेल, कैप्सूल, सूखे, रस वाले या संरक्षित फलों जैसे द्वितीयक उत्पादों में बदलने के लिए प्रसंस्करण और परिवर्तन शामिल हैं।

जैविक, निष्पक्ष व्यापार या भौगोलिक संकेत (जीआई) जैसे प्रमाणन विशिष्ट गुणवत्ता, पर्यावरण या नैतिक मानकों के पालन का संकेत देकर लघु वन उपज में मूल्य जोड़ सकते हैं। मूल्य संवर्धन को बढ़ाने और मूल्य निर्धारण तंत्र में सुधार करने के प्रयास प्राथमिक संग्राहकों और लघु वन उपज पर निर्भर स्थानीय समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान दे सकते हैं।

सामुदायिक स्वामित्व वाली प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना, मूल्य संवर्धन तकनीकों पर प्रशिक्षण प्रदान करना, बाजार के बुनियादी ढांचे और पहुंच में सुधार करना और निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को बढ़ावा देना जैसी पहलों से उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ पहुंचाने वाले अधिक टिकाऊ और समावेशी बाजार बनाने में मदद मिल सकती है। लघु वन उपज उत्पादों में मूल्य संवर्धन और उचित मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करके, बाजार अधिक टिकाऊ और समावेशी बन सकता है, जिससे उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ होगा।

नीतिगत निहितार्थ:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वन उपज के विपणन के लिए मौजूदा चुनौतियों का समाधान करने और वन-निर्भर समुदायों की आजीविका को बढ़ाने के अवसरों का लाभ उठाने की आवश्यकता है। इसे प्राप्त करने के लिए, सरकार को कटाई के बाद के नुकसान को कम करने, उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार करने और उत्पादकों के लिए बाजार तक पहुंच बढ़ाने के लिए कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं, प्रसंस्करण इकाइयों, परिवहन नेटवर्क और बाजार यार्ड सहित बाजार के बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। न्यूनतम समर्थन मूल्य

की सावधानीपूर्वक निगरानी की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे उत्पादन लागत और बाजार की वास्तविकताओं को दर्शाते हैं। सरकारी समर्थन को संग्राहकों के बीच उत्पादक सहकारी समितियों या स्वयं सहायता समूहों को मजबूत करने और बढ़ावा देने की दिशा में भी निर्देशित किया जाना चाहिए, जो सामूहिक सौदेबाजी, थोक खरीद, मूल्य संवर्धन और उत्पाद के विपणन में मदद कर सकते हैं। बाजार सूचना प्रणाली और संपर्कों को बाजार खुफिया नेटवर्क, ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और बाजार सलाहकार सेवाओं जैसी पहलों के माध्यम से बेहतर बनाया जाना चाहिए। दीर्घकालिक पारिस्थितिक संतुलन और संसाधन स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सतत कटाई प्रथाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विपणन में विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जैसे बाजार के बुनियादी ढांचे में संयुक्त निवेश, मूल्य श्रृंखला विकास परियोजनाएं और जागरूकता अभियान।

लघु वन उपज क्षेत्रों के समग्र और समावेशी विकास के लिए वानिकी, कृषि, ग्रामीण विकास और आदिवासी कल्याण से संबंधित विभिन्न नीतियों के बीच नीतिगत सामंजस्य और एकीकरण आवश्यक है। इसके लिए स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सरकारी विभागों और हितधारकों के बीच समन्वय की आवश्यकता है। इन नीतिगत निहितार्थों को संबोधित करके, सरकार जशपुर जिले में लघु वन उपज क्षेत्र के सतत विकास के लिए एक सक्षम वातावरण बना सकती है, जिससे आजीविका में सुधार, गरीबी उन्मूलन और वन संसाधनों का संरक्षण हो सके।

निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में लघु वनोपज विपणन सतत विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे, सीमित बाज़ार पहुँच और विनियामक बाधाओं जैसी बाधाओं के बावजूद, कई सिफ़ारिशें व्यापार की पूरी क्षमता को बढ़ा कर सकती हैं। बाज़ार के बुनियादी ढाँचे में सुधार, अधिक प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करना और क्षमता निर्माण पहलों को लागू करना कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम कर सकता है, उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है और उत्पादकों के लिए बाज़ार पहुँच को बढ़ा सकता है। न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसे नीतिगत समर्थन, संग्राहकों के लिए उचित रिटर्न सुनिश्चित कर सकते हैं और संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं। संग्राहकों और बड़े बाज़ारों के बीच सीधे बाज़ार संपर्क की सुविधा से बिचौलियों को कम किया जा सकता है, जिससे बेहतर कीमतें और बेहतर बाज़ार पहुँच मिल सकती है। इन उपायों को लागू करने के लिए सरकारी एजेंसियों, गैर-सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र की संस्थाओं और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग आवश्यक है, जिसके परिणामस्वरूप जशपुर जिले में लघु वनोपज का अधिक कुशल, समावेशी और संधारणीय विपणन हो सकता है।

संदर्भ:

- *Sharma, R., & Singh, S. (2020). "The Economics of Minor Forest Produce in India." Journal of Rural Development.*
- *Government of India. (2021). "National Policy on Minor Forest Produce." Ministry of Tribal Affairs.*
- *Verma, P., & Kumar, R. (2019). "Market Dynamics of Minor Forest Produce in Central India." Forest Economics Review.*
- *Singh, A., & Banerjee, P. (2019). Marketing of Non-Timber Forest Produce (NTFP) in Jashpur District of Chhattisgarh: A Case Study. International Journal of Commerce and Management Research, 5(1), 59-67.*
- *Das, S., & Parida, B. (2018). Value Addition in Minor Forest Produce Marketing: A Study of Jashpur District, Chhattisgarh. Indian Journal of Commerce & Management Studies, 9(4), 52-58.*
- *Mishra, R. (2018). The role of small and cottage industries in rural development.*
- *https://csidc.in/non_core_sector/food-processing-and-minor-forest-produce/*
- *https://www.indiatoday.in/india/story/chhattisgarh-gets-10-national-awards-for-procurement-processing-and-marketing-of-forest-produce-1838806-2021-08-09*
- *https://mpsfri.org/files/TB_26.pdf*
- *https://fsi.nic.in/inventory_report/chhattisgarh/Forest%20Resources%20of%20Rajnandgaon%20and%20Durg%20Districts%20Chhatisg3.pdf*
- *Arjjumend, Hasrat. (2005). Non-Timber Forest Products And Tribal Livelihoods In North Chhattisgarh.*
- *https://forest.cg.gov.in/posts/bamboo-mission*
- *https://dcmsme.gov.in/old/dips/Jashpur.pdf*

- *https://cgstate.gov.in/html/documents/policies/SIPB/ip.PDF*
- *Shankar, D., Banjare, C., & Sahu, M. (2018). Tuber Crops Based Integrated Farming System Studies in Bastar and Kondagaon Districts of Chhattisgarh. International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, 7(09), 1650–1658. https://doi.org/10.20546/ijcmas.2018.709.199*
- *Economy | District Jashpur, Government of Chhattisgarh | India. (n.d.). https://jashpur.nic.in/en/economy/*
- *Minor Forest Produce Product Park in Deobhog. (n.d.). Drishti IAS. https://www.drishtiias.com/state-pcs-current-affairs/minor-forest-produce-product-park-in-deobhog*